एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पपीते में कीट एवं रोग का प्रबन्धन

(चंद्र सिंह चौधरी[1], रतन लाल शर्मा[2] एवं *सुनीता चौधरी[3])
[1]कृषि विभाग, राजस्थान सरकार, भारत
[2]कृषि अनुसंधान केंद्र (कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर) केशवाना, जालौर-343001, राजस्थान, भारत
[3]श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर- 303329, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: choudharysunita116@gmail.com

1 सफेद मक्खी – इनके नियन्त्रण हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए।

2 जड़ गाँठ रोग – नियन्त्रण के लिए नर्सरी क्षेत्र में कार्बोफ्यूरान–3 जी या निमागान 10 ग्राम प्रति वर्गमीटर के हिसाब से मिलाना चाहिए। मुख्य खेत में प्रति गड्ढे में 5 ग्राम दवा डालनी चाहिए।

3 तना गलन – ग्रसित पौधों का तना सड़ जाता है।

1. पौधे मे जल निकास की पूर्ण व्यवस्था रखें तथा तने के पास पानी भराव को रोकें।
2. ग्रसित पौधों को तुरन्त उखाड़कर नष्ट कर देवें।
3. ग्रसित हिस्से को खुरचकर कॉपर ऑक्सीक्लोराड पेस्ट लेप करना चाहिए।
4. तने के आस पास मिट्टी ऊँची रखनी चाहिए। पपीते का बाग साफ–सुथरा रहे इसके लिए समय–समय पर पेड़ों के चारों तरफ हल्की गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए।

4 पर्ण कुंचन – यह बीमारी वायरस से होती है तथा एफीड व सफेद मक्खी बीमारी फैलाते हैं। ग्रसित पौधों की पत्तियाँ आकार में छोटी, कुचित, विकृत व सिकुड़न लिये मोटी ि"राओं वाली हो जाती हैं। पत्तियाँ प्यालेनुमा व पर्णवृन्त टेढ़े–मेढ़े हो जाते हैं और पेड़ों पर फल और फूल नहीं लगते हैं।

5 आर्दगलन रोग – यह नर्सरी का बड़ा ही गंभीर रोग है। इसका आक्रमण नव अंकुरित पौधों में होता है। इस रोग में पौधों का तना जमीन के पास से सड़ जाता है और मुरझा कर गिर जाता है। प्रायः छोटे पौधे पर ही इसका आक्रमण अधिक होता है, बड़े होने पर पौधे इसके लिए प्रतिरोधी हो जाते हैं। यह रोग गर्म एवं आर्द वातावरण में तथा पौधे काफी घने होने लगें हो तो अधिक होता है।

रोकथाम :

1 बीजों को थायरम, एग्रोसन–जी.एन., डाईथेन एम–45 नामक दवाओं से 3 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।
2 जल निकास का अच्छा प्रबन्धन करना चाहिए।
3 घने तथा अनाव"यक पौधों को पौध"ाला से निकाल देना चाहिए।
4 एक–एक सप्ताह के अन्तर पर कवक ना"ाी (ब्लाईटोक्सका) छिड़काव करना चाहिए।

6 एन्थ्रेक्नोज : इसका आक्रमण तना, पत्तियों और फलों पर होता है। इसके कारण भूरे रंग के लम्बे धब्बे बन जाते हैं। वातावरण में आर्द्रता बढ़ने पर धब्बे तीव्र गति से बढ़कर एक–दूसरे में मिल जाते हैं, जिसके कारण फल सड़ जाते हैं। पहले छोटे और पनीले धब्बे निकलते हैं। जैसे ही कवक फल के अन्दर बढ़ने लगती है, फलों से दूध निकलता है जो चिपचिपा–सा ढीला बना देता है।

रोकथाम :

1 रोगी पौधों पर ब्लाइटॉक्स–50 (0.15 प्रति''ात) का छिड़काव करना चाहिए।
2 1 किलोग्राम डाइथेन एम–45 प्रति 500 लीटर पानी वाले घोल के छिड़काव से काफी अच्छी रोकथाम होती है।

7 मोजेक रोग – ग्रसित पौधों की पत्तियाँ छोटी तथा सिकुड़ जाती हैं तथा रोग ग्रस्त पत्तियों पर फैले हुए दाग पड़ जाते हैं। पौधे पर फूल–फल नहीं बनते हैं। कुछ समय में पौधा मर जाता है। यह बीमारी मोजेक से होती है तथा एफिड द्वारा फैलती है।

रोकथाम :

1 सभी रोग ग्रस्त भागों तथा सम्पूर्ण पौधे को जलाकर नष्ट कर देना चाहिए।
2 रोग को फैलने से रोकने के लिए 250 मि.ली. मैलाथियॉन 50 ई.सी. 250 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तर पर तीन छिड़काव करने चाहिए।
3 पपीते के बाग में रोग फैलने की दशा में अन्त''ास्य फसल नहीं लेवें और बगीचे को पूर्ण साफ रखना चाहिए।

8 फल विगलन रोग – यह रोग सामान्यतया भण्डार गृहों तथा विपणन के समय उत्पन्न होता है। ग्रसित फल मुलायम पड़ जाते हैं तथा इनमें पनीला सड़न पैदा हो जाता है, कभी–कभी फलों पर काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। अधिक आर्द्रता युक्त गर्म स्थानों पर यह रोग तीव्रता से फैलता है।

रोकथाम :

1 फलों का संग्रहण करते समय फल की सतह पर किसी प्रकार की क्षति नहीं आनी चाहिए।
2 फलों को भण्डारण से पूर्व 20 मिनट के लिए 46 से 49 डिग्री से. तक गर्म पानी में डूबाने से कवक नष्ट हो जाती है।
3 ग्रसित फलों को भंडारण कक्षों से निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए।